# पनघट व कत्थक

**डॉ. वन्दना चौबे***

पनघट का शाब्दिक अर्थ है– पानी भरने का घाट अर्थात् जिस तट से पानी भरा जाता है, उसे पनघट कहते हैं। व्याकरणिक दृष्टि से 'पनघट' शब्द पुलिंग है, परन्तु व्यावहारिक स्तर पर महिलाएं ही इससे जुड़ी हुयी हैं। 'कमसिन सहेलियों का है पनघट पे जमघटा। जाने अकेलियों का है दिन किस तरह कटा।'

ये शेर पुराने वक्त के पनघटों की महत्ता व चरित्र दर्शाता है। नल के आविष्कार से पहले पनघट का विशेष महत्व था। पानी भरकर लाने का कार्य सदियों से स्त्रियों के सिर रहा है। आंतरी में भी स्त्रियां ही पानी भरने जाती थीं।

भारतीय संस्कृति में पनघट का विशिष्ट महत्व है। ग्रामीण समाज हो या नगरीय पानी की व्यवस्था तो सभी को चाहिए। इन व्यवस्था का संपादन महिलाओं द्वारा ही होता रहा है। श्रम भरे काम–काज के बीच मनोरंजन बतरस का आनन्द लेने के लिए, अवसर तलाश करके उन्मुक्त हास–परिहास के बीच स्वयं को स्फूर्ति से भरने के लिए, यह ग्रामीण सभ्यता में, आधुनिक भाषा में कहें तो 'क्लब' की संज्ञा पाने वाला स्थान है। जहाँ अपने घर–परिवार, समाज संस्कार के संदर्भ में पूरी जानकारी, वार्ता का केन्द्र बनने के साथ–साथ अपने घर का काम भी होता था तथा वैचारिक ऊर्जा का आदान–प्रदान भी। हाँ घरेलू कार्य का यह महत्वपूर्ण पक्ष है, जाँ आत्म–प्रदर्शन का सुख भी निहित रहता रहा है। स्त्रियाँ अपने को सोने–चांदी के आभूषणों से सजा–संवारकर जब पानी भरने निकलती, तो लोग उसे आश्चर्यमिश्रित हर्ष से देखते थे। पुरूष वर्ग भी वहाँ पानी पीने के बहाने पहुँचता था और स्त्रियों के साथ हास–परिहास करता था।

पनघट की बात चलते ही कृष्ण की छवि स्मृति पटल पर आ जाती है। मथुरा–वृन्दावन की गलियों से पनघट पर आने वाली राधा को छेड़े बिना उन्हें कहाँ चैन? कृष्ण और गोपियों की रास–लीला को सभी जानते हैं। रास शब्द का मूल रस है और रस स्वयं श्रीकृष्ण हैं। रसो वै सः। जिस की क्रीड़ा में एक ही रस अनेक रसों के रूप में होकर अनंतानंत रसों का आस्वादन करे उस लीलाधारी दिव्य पुरूष का नाम है कृष्ण।

***एसोसिएट प्रोफेसर, कत्थक नृत्य वनस्थली विद्यापीठ (राज.)**

कृष्ण शब्द संस्कृत के 'कृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है, खींच लेना या आकर्षित करना, इसलिए कृष्ण सबके आकर्षण का केन्द्र हैं। नटखट कला साहित्य के शिरोमणि कृष्ण कत्थक नृत्य के प्राण आधार बिन्दु हैं। इसलिए कत्थक का एक दूसरा नाम 'नटवरी नृत्य' भी है। कत्थक नृत्य में कृष्ण के छोटे–छोटे भाव पनघट की छेड़छाड़, मटकी फोड़ना, माखन चोरी, गेंद खेलना, कालिया मर्दन, चीरहरण आदि गतभाव के अन्तर्गत किया जाता है। गतभाव में नर्तक अकेले ही किसी कथानक के भाव को अंग संचालन द्वारा प्रकट करता है। कभी वह श्याम बन जाता है, कभी राधा, कभी वह ग्वाल का अभिनय करने लगता है, तो कभी यशोदा भी स्वयं बन जाता है।

इसके अतिरिक्त पनघट पर राधा कृष्ण की छेड़छाड़ ठुमरी द्वारा भी अभिनित किये जाते हैं। ठुमरी में श्रृंगार के शब्दों की बहुलता होती है। क्योंकि कत्थक नृत्य के भाव प्रदर्शन का केन्द्र मूलतः श्रृंगार ही होता है। यदि कहा जाए कि कत्थक मूलतः श्रृंगार रस से परिपूर्ण भावाभिव्यक्ति है तो गलत न होगा। चूंकि कत्थक में गायकी सदैव ऐसे गीतों की ही रही है, जो श्रृंगार प्रधान हो। अतः ठुमरी कत्थक का अनिवार्य अंग बन गया है। रीतिकाल से पूर्व जब कत्थक मंदिरों तक सीमित था तब भी ठुमरियां रची गई लेकिन तब संत कवियों द्वारा इनकी रचना राधा कृष्ण के आध्यात्मिक प्रेम को बना कर की गई और इन्हें पद कहा गया। मुगलकाल में इन्हीं पदों को ठुमरी के नाम से रचा गया। इसमें अंग, प्रत्यंग, उपांगों द्वारा नायिका के सूक्ष्म भावों का सरलता से अभिनय किया जाता है।

ठुमरी द्वारा कृष्ण की विविध छवियाँ प्रस्तुत की जाती है जिसमें महत्वपूर्ण विषयों में एक पनघट है विविध भाव बोध इस एक शब्द के माध्यम से प्रस्तुति पाते हैं, जहाँ लास्य है, झिड़की है, खीज है, उपालम्भ है और तब यह शब्द विविध आयामों को प्रस्तुत करते हुए दर्शक को भाव विभोर कर देता है–

''कान्हा मैं तोसे हारी, छोड़ो सारी सुनो बिहारी।।
निस दिन छेड़ करत नहीं जाने देत पनघटवा की गैल .....।।''

इस ठुमरी में मुग्धा नायिका का कहना है कि हम पानी भरने जाते हैं किन्तु नन्दलाल अजूबी बातें करते हैं और पानी भी नहीं भरने देते, डगर घेरे खड़े हो जाते हैं, हम विवश हो जाते हैं। दूसरी गोपियां हमारी ओर कुतूहल से देखती है और मुझे लाज आती है। इसी प्रकार एक और ठुमरी ''डगर चलत देखे श्याम कर गइयां। नीर भरन मैं गई पनघट को, देखो तहाँ श्याम नटखट को.....।'' तथा ''ऐसी पनघट पे करत हट नाहि रे, भरन दे जल न करत हाथा पायी रे.....।।'' एवं ''देखो कान्हा बोलो ना हम संग, पनघट छोड़ो जावो न रोको कान्हा.....।''

पनघट से पानी लाना ब्रजवासियों की दैनिक क्रिया है। इसमें कृष्ण द्वारा बांसुरी बजाकर उनका रास्ता रोकना कार्य में विघ्न पैदा करता है। नायिका लोक व्यवहार की बात कहकर कृष्ण से विनय करती है कि उसे पानी भरने दें, कंकरी ना मारे नहीं तो गागर फूट जायेगी और गागर फूटेगी तो वो गीली हो जायेगी ऐसी अवस्था में सास, नन्द देखेंगी तो उपलम्भ देगी– ''मग रोको ना रे सावरिया। शीश लिये हूँ, मैं गगरिया। दूर डगर पनघट की मेरी, काहे कान्हा तूने राह घेरी छेड़ोना छेड़ोना बांसुरियां.....।'' विनती करूं मैं तोसे परूं तोरे पैया, जाने देओ मोहन छाड़ो मोरी बैंया। मारोन मारोन कांकरिया, सास नन्द सब बैरिन मोरी। काहे कान्हा तुम काहे छेड़ी.....। इसी प्रकार बिन्दादीन जी की एक और ठुमरी में पानी भरने जाती हुई नायिका का कान्हा बाँह मरोड़ते हैं, इसी हाथा पायी में उसके गले का हार भी छीन लेते हैं तथा मांगने पर भी नहीं देते तब नायिका धमकी भरे शब्दों में कहती है, तुम्हारे घर जाकर मैं शिकायत करूंगी,– ''काहे रोकत डगर प्यारे नन्द लाल मेरो। नित ही करत झगरा हमसो पनघट नहीं जाने देत छीन लीनों है गले को हार, मांगू नहिं देव रे। दूंगी दुहाई अबही जाय नन्द जी के डेरे....।' तत्पश्चात् ब्रजवासियाँ मां यशोदा से नन्दलाल के बर्ताव की शिकायत करती है– 'तेरो नहीं मानत श्याम अब जाने नहीं दे पनघट को....।' फिर भी कृष्ण तो अपने मन के राजा हैं वह कहाँ मानने वाले। ब्रजबालाओं से छेड़छाड़ करना नहीं छोड़ते, तथा उन्हें रंग से सराबोर कर देते हैं। एक बृजबाला विनतीपूर्वक उनसे कहती है– 'सुनो जी सुनो नडारो मोह पै रंग, मग चलत बिहारी मैं कह कह हारी। कुंवर श्याम पनघट पै न आया करो डगर चलत पिचकारी न चलाया करो....।'

ठुमरी के अतिरिक्त कत्थक नृत्य में पनघट का वर्णन कवित्त में भी मिलता है। कवित्त द्वारा अभिनय की परम्परा कत्थक नृत्य में रीतिकाल से चली आ रही है। ब्रज भाषा में श्रृंगार रस व नायक नायिका भेद के स्फुट छंदों की रचना इसी काल में हुयी। किसी कविता अथवा पद को नृत्य के बोलों के साथ लय और ताल में बांधकर उसके प्रत्येक शब्द को उसी प्रकार भाव बताते हुए प्रदर्शित करना 'कवित्त' कहलाता है। गोपिकायें पनघट पर किस प्रकार सोलह श्रृंगार कर जल भरने जाती थी, कवित्त द्वारा इसका बहुत ही सुन्दर वर्णन प्रसिद्ध कत्थक विज्ञ पं. सुन्दर प्रसाद जी ने किया है–

''करत सोलह श्रृंगार सजकर गागर सिरधर, निकसी राऽधेऽ जाऽत हैऽपन घटपनि हाऽरिन भरन जलजम नाऽको नीऽरऽ.....। कवित्त द्वारा पनघट पर नायक–नायिका के छेड़छाड़ का शाब्दिक चित्र चाक्षुष बिम्ब उपस्थित कर जीवन्त कर देता है– 'पनघट जलभर नेऽआई राऽऽधा आऽनके कृष्णने घेऽरल ईऽहैऽ .....। इसी प्रकार– 'यमुनाऽ तटपेऽ ऽऽपन घटपेऽ ऽऽबंऽ शीऽवट पेऽऽऽ जाऽऽय .....।



तथा ''कृष्णक न्हैऽऽ नाऽगर नटवर पनघट परतुम घेऽरल ईऽहैऽ ....।

अन्ततोगत्वा पनघट कृष्ण की ब्रजगोपियों से छेड़छाड़ का मुख्य केन्द्र बिन्दु रहा है। यह ऐसा स्थान है जहाँ ब्रज नारियाँ स्वच्छन्द रूप से आ जा सकती थीं और उन्हें पनघट पर आते देख कृष्ण का चंचल मन उद्वेलित हो उठता था। पनघट पर जाते हुए वे उनका रास्ता रोकते, कभी वे उनकी चुनरी खींचते, कभी बांहें मरोड़ते, कभी उनके वस्त्रों को लेकर कदम्ब पर चढ़ जाते तो कभी उनकी भरी मटकी को कंकड़ से फोड़ते, उनसे हाथा पायी करते, कभी गरवा लगाते। इस प्रकार पनघट से आते–जाते ब्रजबालाओं से विविध प्रकार की छेड़खानी करते। पौराणिक आख्यानों में उद्वत कृष्ण और उनकी नायिकाओं के बीच हुए पनघट के ये विविध दृश्य जब कत्थक कलाकार गतभाव, ठुमरी व कवित्त द्वारा मंच पर अभिनित करता है, तो कुछ समय के लिए प्रेक्षक भाव विभोर होकर आज भी पौराणिक कथानकों के रस बोध का जीवन्त आनन्द लेते हैं।